HI

कोविड महामारी का विश्लेषण और हमारी सम्मिलित भविष्य की कल्पना फेमिनिस्ट नज़रिये से

इंटरसेक्शनल फेमिनिस्ट फ्रेमवर्क का सारांश

Sama
Resource Group for Women and Health

यह सारांश महामारी से संबंधित फेमिनिस्ट इंटेरसेक्शनल फ्रेमवर्क के बारे में है ।
इस फ्रेमवर्क में वर्तमान संदर्भ में महामारी और उससे सम्भंदित विषयों पर विश्लेषण किया गया है, जैसे कि, सार्वजनिक स्वास्थ्य ज्ञान, देखभाल और टेक्नोलॉजी जिसमें निदान / जाँच, टीके और रोग चिकित्सा तक लोगों की पहुँच के बारे में चर्चा की गई है ।

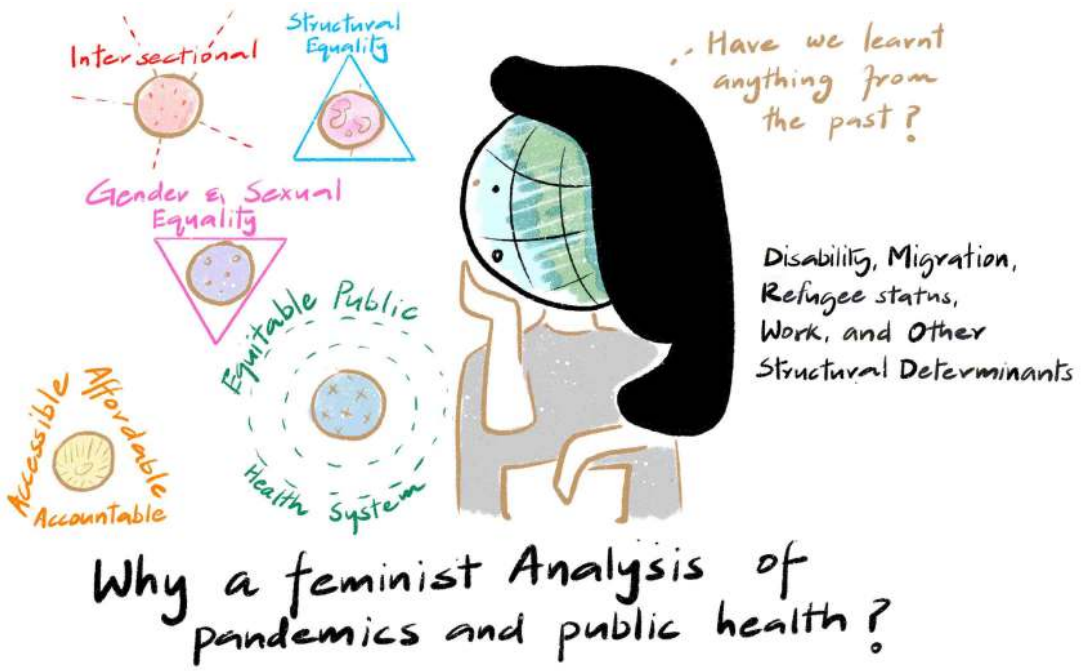

महामारी एवं सार्वजनिक स्वास्थ्य का फेमिनिस्ट विश्लेषण इंटेरसेक्शनल होना चाहिए । इसे संरचनात्मक भेदभाव, असमानताओं और इंटेरसेक्शन्स, जेंडर, जाति, वर्ग, धर्म, और जेंडर पहचान एवं सेक्सुअल ओरिएंटेशन, विकलांगता प्रवासी मजदूरों और शरणार्थी के स्थिति, कार्य और अन्य ढांचागत सामाजिक निर्धारकों के बीच आपसी जुड़ाव को समझना जरुरी है । इंटरसेक्शनल नारीवादी ढाँचा एक ऐसा सार्वजनिक स्वास्थ्य प्रणाली की मांग करता है जो, सभी के पहुँच और उच्च लागत में हो, सभी के लिए समान और निष्पक्ष हो, समावेशी, प्रभाव और जवाबदेह हो ।

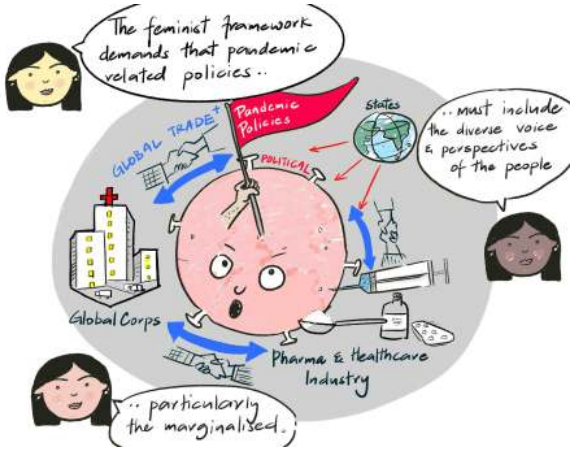

इंटरसेक्शनल नारीवादी दृष्टिकोण यह मानता है कि महामारी संबंधी नीतियां राजनीतिक प्रक्रियाओं में समाविष्ट हैं और यह राज्य, वैश्विक स्तर पर बहुराष्ट्रीय कंपनियां, स्वास्थ्य देखभाल और दवा उद्योग के साथ वैश्विक व्यापार पारितंत्र में नीति निर्माण में एक प्रबल भूमिका निभाते हैं। नारीवादी फ्रेमवर्क यह मांग करता है कि महामारी से संबंधित नीतियों और निर्णय लेने में लोगों की विविध आवाजें और दृष्टिकोण शामिल होने चाहिए, विशेष रूप से हाशिए पर है, जिन्हें अक्सर नीति निर्माण में नजरअंदाज कर दिया जाता है।

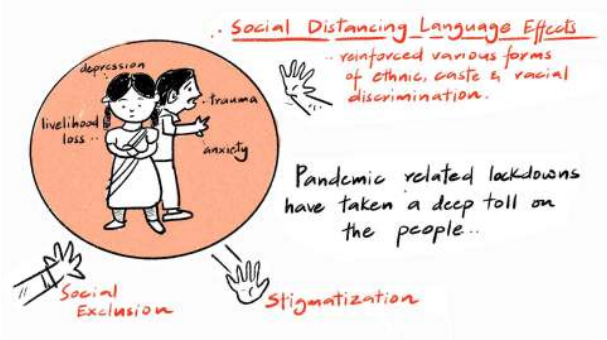

महामारी से संबंधित लॉकडाउन ने लोगों की आजीविका, भावनात्मक और मनोवैज्ञानिक अवस्थाओं पर गहरा असर डाला है, जिससे लोगों को मानसिक तनाव, सदमा और अवसाद हुआ है। इसके अलावा, 'सामाजिक' दूरी की भाषा ने निस्संदेह हाशियाकरण,जाति, धर्म और वर्ग आधारित भेदभाव, सामाजिक बहिष्कार के साथ-साथ दोषारोपण के विभिन्न रूपों को और भी गहरा कर दिया है। एक नारीवादी दृष्टिकोण एक प्रभावी सार्वजनिक स्वास्थ्य प्रतिक्रिया की मांग करता है जो अंतर्निहित रूप से देखभाल करने, गैर-भेदभावपूर्ण, गैर-सत्तावादी, लोकतांत्रिक, गरिमा और मानवाधिकारों को बनाए रखने और सम्मान करने का प्रयास करती है।

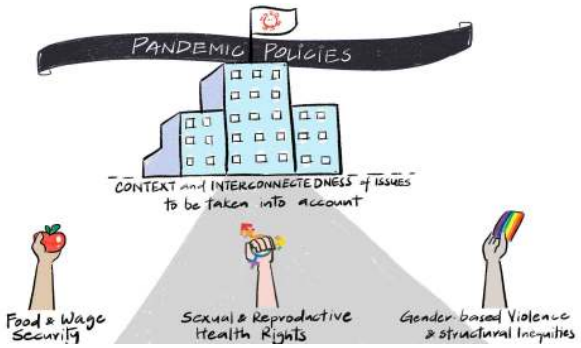

वास्तव में उत्तरदायी होने के लिए नीतियों को विभिन्न संदर्भों, जेन्डर परिवर्तनकारी उपयोगिता व सम्पूर्ण जीवन-शैली को ध्यान में रखना होगा; व भोजन, आजीविका, सामाजिक सुरक्षा, यौन व प्रजनन स्वास्थ्य व अधिकार, जेन्डर आधारित हिंसा और अन्य संरचनात्मक असमानताओं वाले मुद्दों के बीच के आपसी जुड़ाव को गंभीरता से लेना होगा।

सामुदायिक फ्रंटलाइन स्वास्थ्य कार्यकर्ताओं और सफाई कर्मचारियों ने महामारी के दौरान और उससे पहले समुदायों की देखभाल करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई, और इसके बावजूद, स्वास्थ्य प्रणाली में उनकी सबसे कम देखभाल की गई। नारीवादी ढांचा उनके काम की अनौपचारिक और अनिश्चित काम के स्वरुप को पहचानता है अंततः इन कार्यकर्ताओं के लिए सामाजिक सुरक्षा, श्रम की गरिमा, सुरक्षा उपकरणऔर उचित मेहनताना की मांग करता है।

आंकड़ो से पता चलता है कि उच्च-आय वाले देशों ने, पहले से ख़रीदे समझौतों(प्री-परचेस अग्रीमेंट्स), विनिर्माण एकाधिकार और बौद्धिक संपदा अधिकारों का प्रयोग करके, कोविड -19 टीकों के अत्यधिक स्टॉक जमा किए, जबकि गरीब देश अभी भी प्रतीक्षा में है, जिसे 'वैक्सीन अपर्थाइड' बुलाया जा रहा हैं । एक नारीवादी ढांचा यह मानता है कि टीकों की उत्पादन, वितरण, तकनीकी और टीकों की आपूर्ति और वितरण से संबंधित जानकारी साझा करने में वैश्विक और स्थानीय असमानताओं को दूर करने की तत्काल आवश्यकता है।

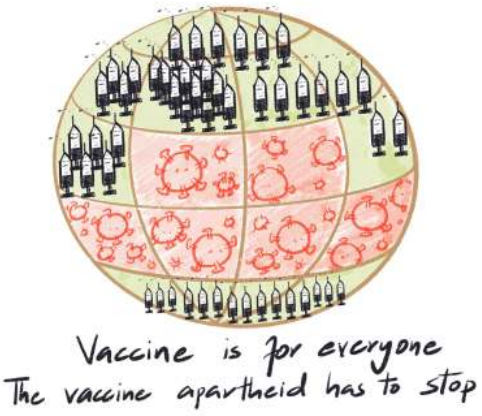

हम 'दान' के विशेषाधिकार की निंदा करते हैं, जो लोगों के अधिकारों और गरिमा पूर्ण जीवन के प्रतिकूल है। हमारी नारीवादी प्रतिक्रिया 'दान' की पुनः कल्पना कि आग्रह करती है, जिसमें लोगों की स्वास्थ्य जरूरतों का निदान किसी सहायता या दान भाव जो पितृ संरक्षणवाद सोच के अनुसार न हो कर, बल्कि क़ानूनी तौर पर,अंतरराष्ट्रीय दायित्व और मानव अधिकारों के सिद्धांतों के तहत, मानव कल्याण को बढ़ावा देते हुए हो।

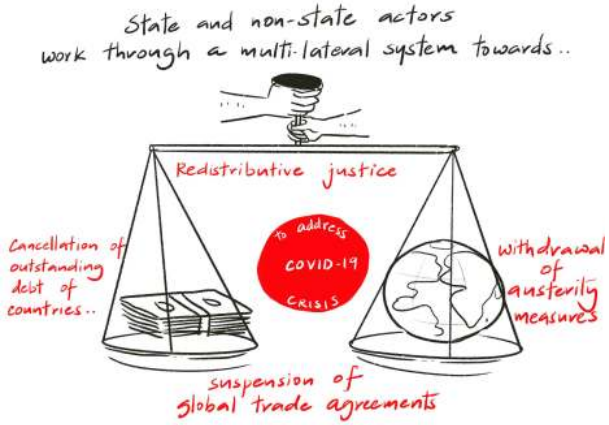

नारीवादी ढांचे की राज्य और ग़ैर-राज्य स्तरीय एक्टरों से मांग है कि वे एक बहुपक्षीय प्रणाली के माध्यम से न्याय प्राप्त करने की कोशिश करें, देशों द्वारा बकाया ऋण को रद्द करें, कठोर कानूनी उपायों को वापस लेने और प्रतिबंधात्मक वैश्विक व्यापार समझौतों को निलंबित करने की दिशा में काम करें, ताकि कोविद -19 का वर्तमान संकट को दूर किया जा सके।

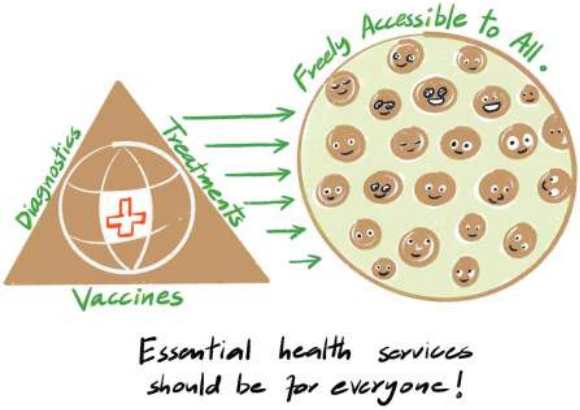

इंटरसेक्शनल नारीवादी दृष्टिकोण यह मानता है कि महामारी के बाद वैश्विक स्वास्थ्य संरचना में प्रणालीगत बदलाव स्थापित करने के लिए निदान, टीके, उपचार, अन्य चिकित्सा विज्ञान तक समान पहुंच बनाने और पेटेंट को रद्द कराने के लिए पैरवी करना चाहिए।

कोविड -19 महामारी एकजुटता की मांग करता है, न कि विभाजन की, सामूहिक पहल की, न कि एकपक्षीयता की। अफसोस की बात है कि इस सार्वजनिक स्वास्थ्य आपातकाल को 'महामारी अरबपतियों' को बढ़ावा देते हुए एक मुनाफाखोरी के अवसर के रूप में लिया गया है। इसके विपरीत, महामारी के प्रति एक इंटरसेक्शनल नारीवादी प्रतिक्रिया लोगों को और उनकी जरूरतों को प्राथमिकता देने की आवश्यकता को दोहराती है।

वैक्सीन सम्भंदित झिझक को संभोदित और दूर करने के लिए लोगों के मन में विश्वास बनाये रखना ज़रूरी है और उसके लिए निरंतर प्रयास करते रहना पड़ेगा। इसमें निष्पक्ष, पारदर्शी और विश्वसनीय जानकारी शामिल होनी चाहिए कि नैदानिक परीक्षण कैसे किए जाते हैं, आपातकालीन उपयोग प्राधिकरण के अनुमोदन का आधार क्या है, प्रतिकूल घटनाओं की संभावना और उसको कैसे सुधार किया जा सकता है। टीकों और उनकी प्रभावशीलता के बारे में गलत धारणाएं कम करने, मिथकों और अफवाहों को दूर करने के लिए व्यापक, विश्वसनीय और नियमित सार्वजनिक स्वास्थ्य संदेश अति आवश्यक है।

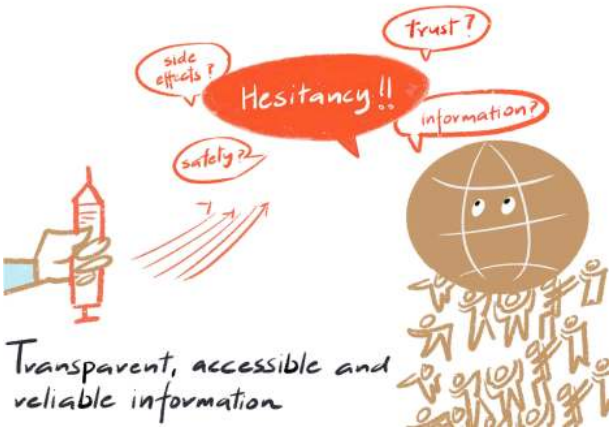

आंकड़े यह संकेत करते है कि कई देशों में महिलाओं और ट्रांस महिलाओं की तुलना में अधिक पुरुष कोविड -19 टीकाकरण प्राप्त करने में सक्षम हुए हैं। सामाजिक-सांस्कृतिक और आर्थिक असमानताओं को पहचानने और संबोधित करने के साथ-साथ जेंडर भूमिका, पितृसत्ता, डिजिटल विभाजन, टीकों और सस्ती जीवन रक्षक उपचार तक पहुंच सुनिश्चित करने में आगे के लिए यह सम्मिलित तरीका हो सकते है।

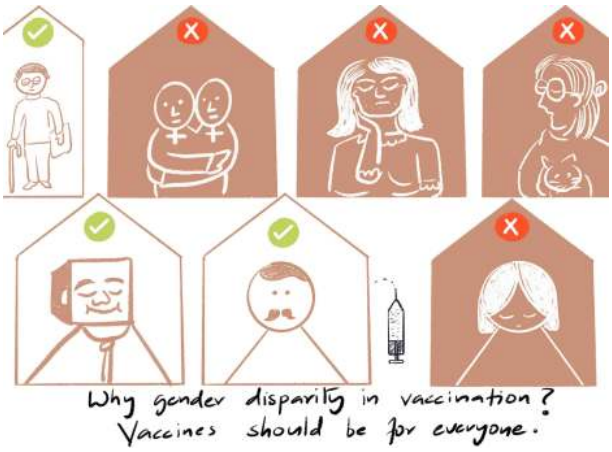

महामारी उपरांत भविष्य के लिए इंटरसेक्शनल नारीवादी दृष्टिकोण में जरूरी है कि :

- सार्वजनिक स्वास्थ्य में राज्य के निवेश में वृद्धि सुनिश्चित करना और स्वास्थ्य के सामाजिक निर्धारकों,और सार्वभौमिक स्वास्थ्य देखभाल को बढ़ावा देना।
- जेंडर, सेक्स, विकलांगता और साथ ही अन्य प्रमुख सूचकों पर आंकड़े सुनिश्चित करें।

- सामाजिक और आर्थिक स्थिरता, पर्यावरणीय स्थिरता और जेंडर समानता प्राप्त करने के लिए एक बहुपक्षीय प्रणाली का निर्माण करें।

- सहयोगात्मक क्षेत्रीय और वैश्विक पहल के साथ-साथ एकजुटता के माध्यम से सभी के लिए मानवाधिकार और मौलिक स्वतंत्रता के साथ-साथ सामाजिक न्याय सुनिश्चित करें।

- एक ऐसी दुनिया का निर्माण करने का प्रयास करें जहां व्यक्ति से लेकर समुदाय तक सभी स्तरों पर संवेदना, सहभागिता, लचीला और बदलाव शील न्याय को महत्व दिया जाए।

- इंटरसेक्शनल पहचानों को एक साथ लाने के लिए व्यक्तिगत और वैश्विक सामूहिक संघर्षों के बीच जुड़ाव बनाना, बाधाओं को दूर करने में आने वाली जटिलताओं और सीमाओं को पहचानना।

- यह देखते हुए कि महामारी अभी खत्म नहीं हुई है, हमे नऐ समाधान के लिए वैश्विक एकजुटता का निर्माण करना होगा और आगे बढ़ने के लिए उपयुक्त प्रतिक्रियाओं को अपनाना होगा।

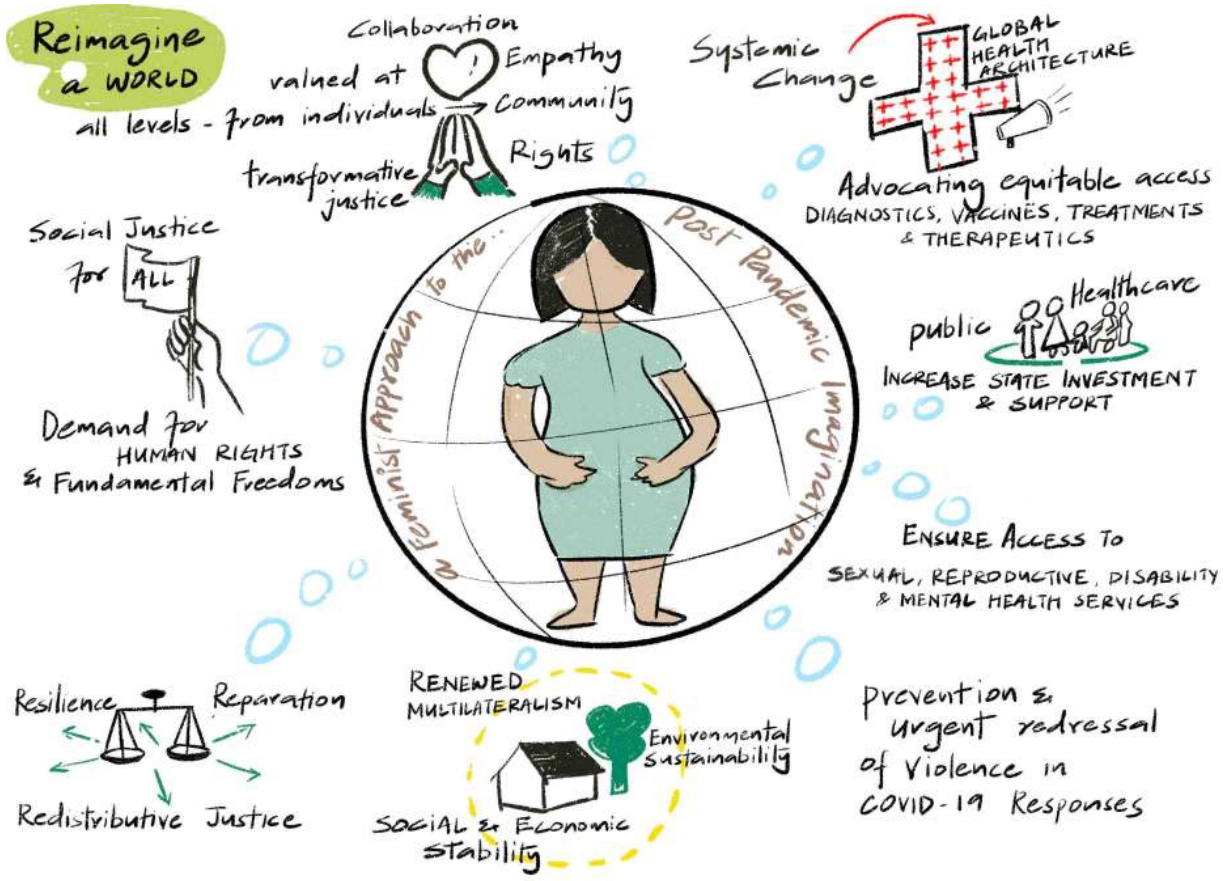

हम इस इंटरसेक्शनल नारीवादी ढांचे को विकसित करने में सामुदायिक स्वास्थ्य कार्यकर्ताओं, नारीवादी आंदोलनों और स्वास्थ्य आंदोलनों के योगदान का आभार व्यक्त करते है ।

यह विस्तारपूर्वक लिखे फ्रेमवर्क का सारांश है -
The Unravelling Pandemic: Envisioning our intersectional feminist futures (कोविड महामारी का विश्लेषण और हमारी सम्मिलित भविष्य की कल्पना, फेमिनिस्ट नज़रिये से)

चित्र: श्रीनिवास मंगिपुडी

हैंडआउट तथा वीडियो की अवधारणा और समन्वय: सरोजिनी नदीमपल्ली

सारांश: सरोजिनी नदीमपल्ली, प्रियम लिज़मेरी चेरियन, आकृति पसरीचा,

साथ में देवकी नांबियार, नीलांजना दास, दीपा वेंकटचलम, प्रज्ञा त्रिपाठी और अदसा फातिमा

फ्रेमवर्क का वीडियो: रंजन डे

वीडियो का लिंक: https://youtu.be/1FZU39UviYI

For more information, contact

Sama – Resource Group for Women and Health
B-45, 2nd Floor, Main Road Shivalik, Malviya Nagar
New Delhi - 110017
Phone No. 011-40666255 / 26692730

Website: www.samawomenshealth.in
Facebook Page: Sama - Resource Group for Women and Health
Twitter: @WeAreSama